(1) शुद्ध कल्याण

इस राग की उत्पत्ति कल्याण थाट से मानी गयी है। इस राग के आरोह में म, नि और अवरोह में म वर्जित माना गया है। अतएव इसकी जाति औडव-षाडव है। इस राग में निषाद स्वर अल्प है। इसका वादी स्वर गांधार तथा सम्वादि स्वर धैवत है। इस राग का गायन समय रात्रि का पहला प्रहर माना जाता है। इसमें सभी स्वर शुद्ध लगते हैं।

आरोह - सा रे ग प ध सां।

अवरोह → सां नि ध प, प ग ^{प} रे सा।

पकड़ → साग रे साग ऽ ^{प} रे ऽ सा, ऩि ध़ ऩि ध़ प।

(२) छायानट :-

छायानट की उत्पत्ति कल्याण थाट से मानी जाती है। इस राग में दोनो मध्यम प्रयोग किये जाते हैं। इस राग के आरोह - अवरोह में सातों स्वरों का प्रयोग किया जाता है, अतएव यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इस राग का वादी स्वर ऋषभ तथा सम्वादी स्वर पंचम है। इस राग का गायन समय रात्री का प्रथम प्रहर माना गया है।

आरोह → सा, रे, ग, म, प, नि ध सां।
अवरोह → सां नि ध प, मे प ध प, ग म रे सा।
पकड़ → प रे ऽ रे ग ऽ ग म ऽ म प ऽ ग म रे, सा रे सा।

Scanned with CamScanner